एक आदमी को कितनी जमीन चाहिए?

लियो टॉल्स्टॉय

लालची किसान पखोम की यह करामाती और संक्षिप्त कहानी बच्चों के लिए 1886 में, लियो टॉल्स्टॉय ने लिखी थी. अधिक भूमि प्राप्त करने के अपने लालच में, पखोम, बश्किरों की भूमि को पूरी तरह छान मारता है, और तय करता है कि एक दिन के चलने में वो कहाँ अधिक से अधिक भूमि प्राप्त कर सकता है.

एक आदमी को कितनी जमीन चाहिए? टॉल्स्टॉय की सुन्दर कहानी को शानदार चित्रों के साथ जोड़ती है जो पखोम की यात्रा का विवरण देती है और रूसी संस्कृति की विविधता की भी एक अंतर्दृष्टि प्रदान करती है.

एक आदमी को कितनी जमीन चाहिए?

लियो टॉल्स्टॉय

चित्र : ऐलेना एबेसिनोवा

हिंदी : अरविन्द गुप्ता

एक बार रूस में दो बहनें रहती थीं. बड़ी बहन ने शहर में रहने वाले एक व्यापारी से शादी की. छोटी बहन ने गांव में रहने वाले एक किसान से शादी की. जब बड़ी बहन, छोटी बहन से मिलने गई, तो उसने शेखी बघारी: "शहर में मेरा जीवन बहुत अच्छा है, तुम्हारी तुलना में बहुत बेहतर है. मैं एक बड़े, सुंदर घर में रहती हूं. मेरे यहाँ सब कुछ साफ-सुन्दर है, और मैं जो चाहूं खा-पी सकती हूं. मैं मनोरंजन के लिए घूम सकती हूँ और थिएटर देखने जा सकती हूं."

18 Большой домъ 35
ТЕАТР
ВОДА
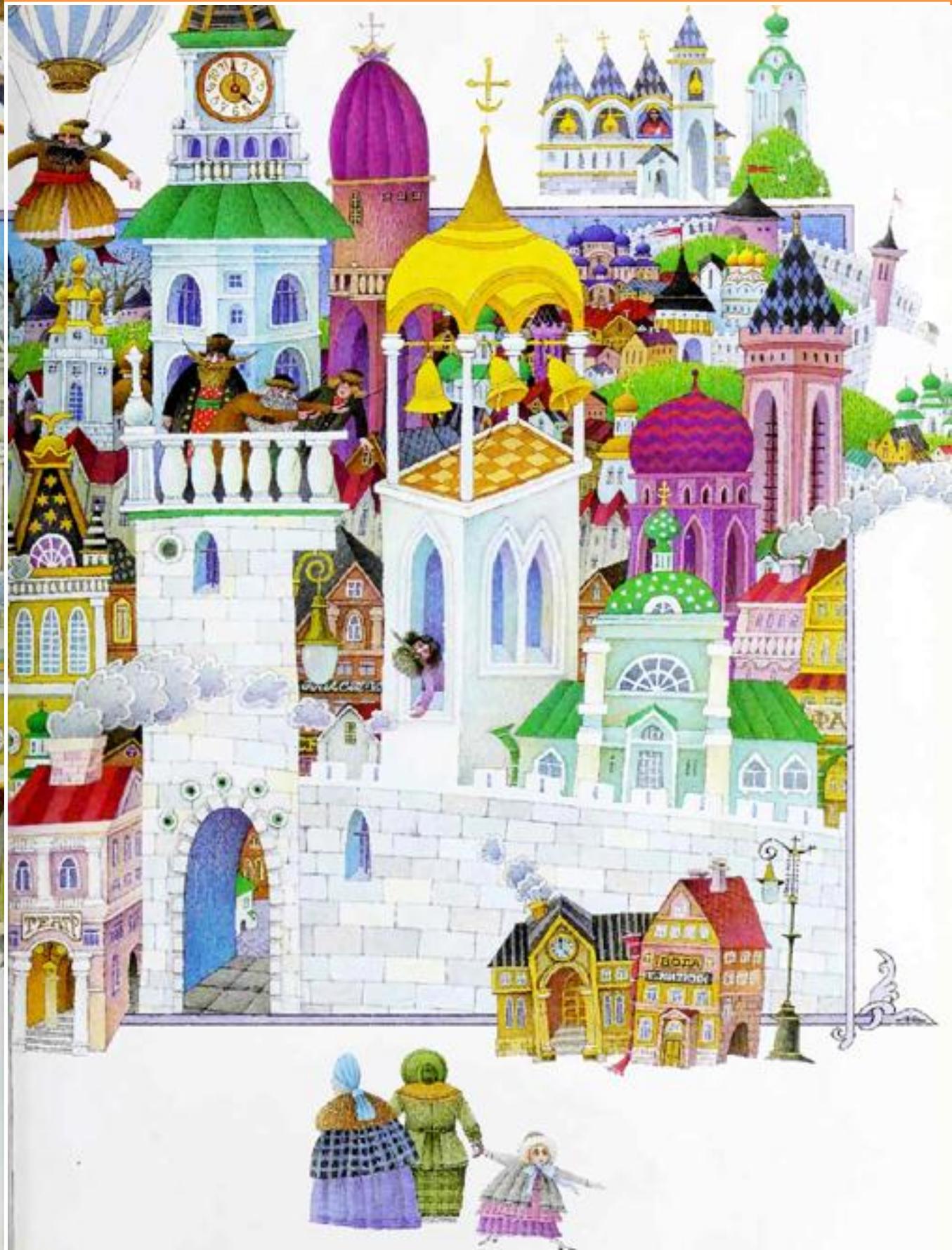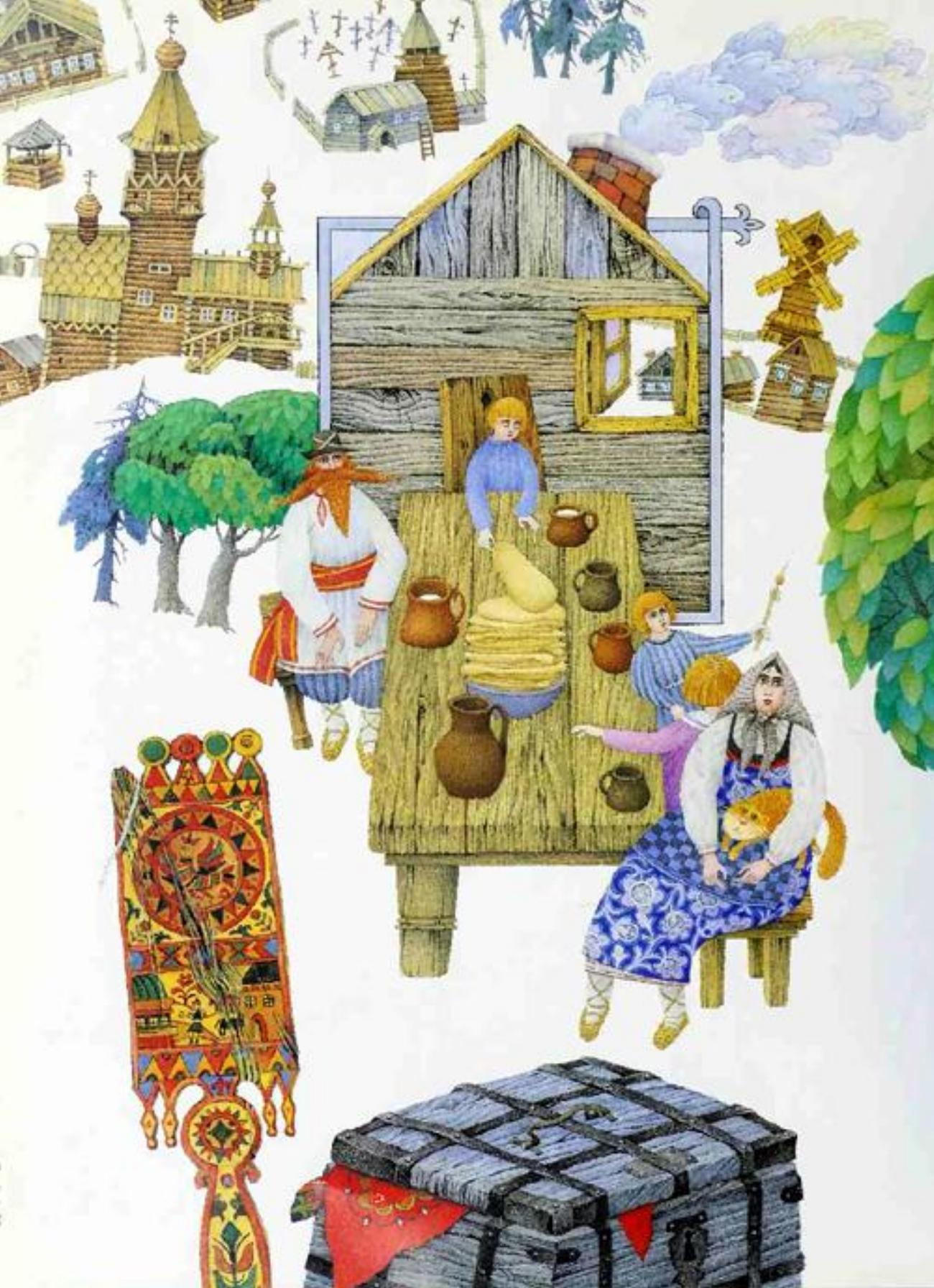
छोटी बहन ने गांव में अपने जीवन के बारे में कहा, "यह सच है कि गांव का जीवन उतना सुंदर या स्वच्छ नहीं है जितना आपका शहर में है. हमें कड़ी मेहनत करनी पड़ती है. लेकिन हमारा जीवन शांत और सुरक्षित है. ज़मीन से हमें खाने को मिल जाता है, जबकि शहर में आप सब कुछ खो सकते हैं. शहर में बड़े प्रलोभन होते हैं. तुम्हारा पति शराब पीना या जुआ खेलना शुरू कर सकता है. उसे कोई प्रेमिका मिल सकती है. पर ऐसा कोई बकवास ख्याल मेरे पति के दिमाग में कभी नहीं आएगा. वो बहुत मेहनती है."

छोटी बहन का पति पखोम आग के पास लेटा हुआ था. उसने सुना कि उसकी पत्नी क्या कह रही थी और उसने अपने मन में सोचा, कि वो ठीक ही कह रही थी. उसका हर शब्द सच था. हालाँकि, यह बात बहुत शर्मनाक थी कि उनके पास बहुत कम जमीन थी. अगर हमारे पास कुछ और जमीन होती तो मैं किसी से कभी नहीं डरता.

उनके गाँव का जमींदार हमेशा किसानों के साथ शांति से रहता था. लेकिन जब से उसने एक मैनेजर काम पर रखा, तो उससे सभी के लिए समस्याएँ पैदा होना शुरू हुईं. यदि कोई गाय जमींदार की ज़मीन में गलती से भटक कर चली जाती, तो मैनेजर उस किसान पर जुर्माना लगाता. पखोम को अक्सर ये जुर्माना भरना पड़ता था. उसके पास जो कुछ थोड़ा-सा पैसा बचा था, वो जल्दी खत्म हो गया. जल्द ही वह अपने परिवार के साथ बदतमीज़ी से पेश आने लगा.

अंत में जमींदार ने अपनी ज़मीन किसानों को बेच दी. पखोम ने इसे बड़ी ईर्ष्या से देखा क्योंकि उसके पड़ोसी ने ज़मींदार की पचास एकड़ जमीन खरीदी थी. पखोम ने अपनी पत्नी से कहा, "देखो, सब पड़ोसी जमीन खरीद रहे हैं. अब हमें भी कुछ खरीदनी चाहिए."

फिर पखोम और उसकी पत्नी ने शहर में रहने वाले अपने साले से पैसे उधार लिए. पखोम के बेटे को दूसरे किसानों के लिए काम करना पड़ा. लेकिन पखोम ने पच्चीस एकड़ जमीन खरीदने में कामयाबी हासिल की, जिस पर भोजपत्र के पेड़ों का एक छोटा सा झुरमुटा था.

पखोम बहुत खुश हुआ. अब वो खुद का मालिक था. उसके खेत में फसल ऊंची खड़ी थी. भरपूर फसल हुई, और उसने बाजार में अच्छा लाभ कमाया. वो अपना सारा कर्ज चुकाने में कामयाब हुआ. अब उसके घर में शांति और खुशी थी.
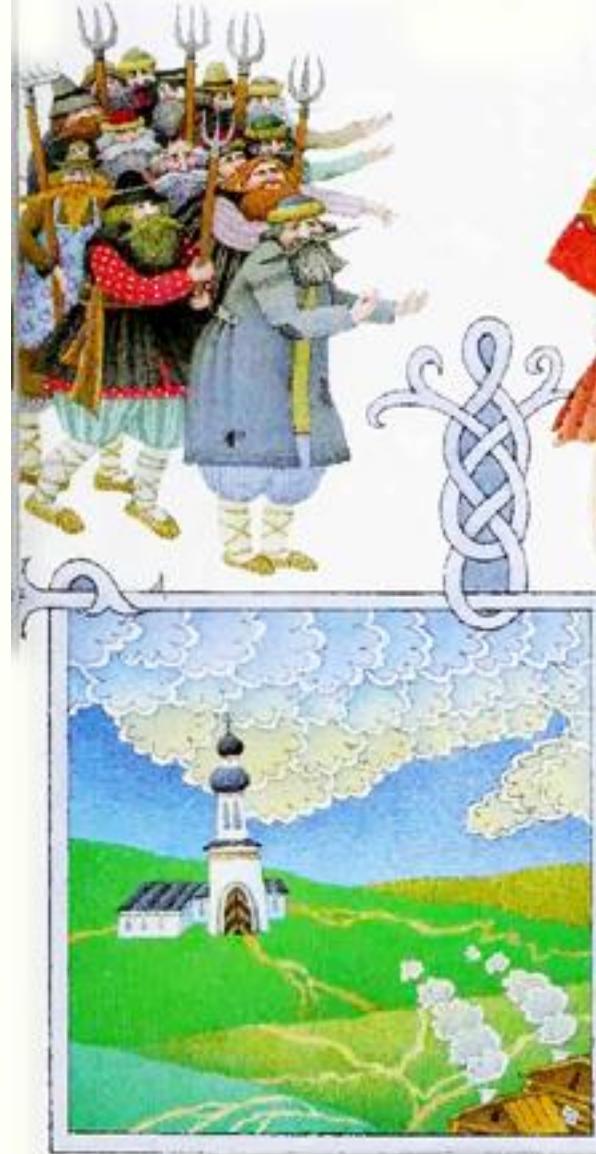
लेकिन ये सिलसिला ज्यादा दिनों तक नहीं चला. अक्सर पड़ोसी गायें उसकी ज़मीन पर भटककर आ जाती थीं और तब तक चरती थीं जब तक कि उनका पेट नहीं भर जाता था. पखोम ने किसानों से अपने मवेशियों की देखभाल करने को कहा. लेकिन उन्होंने वो अनसुना किया. इसलिए वो अपने दो पड़ोसियों को जुर्माना भरने के लिए अदालत में ले गया. इससे पड़ोसी गुस्सा हुए, और उन्होंने जानबूझकर पखोम की भूमि को क्षतिग्रस्त कर दिया. एक सुबह, पखोम ने पाया कि उसके प्यारे छोटे भोजपत्र के सभी पेड़ों को गिरा दिया गया था और उनकी छाल छील दी गई थी. इससे उसका दिल टूट गया और वो गुस्सा भी हुआ.
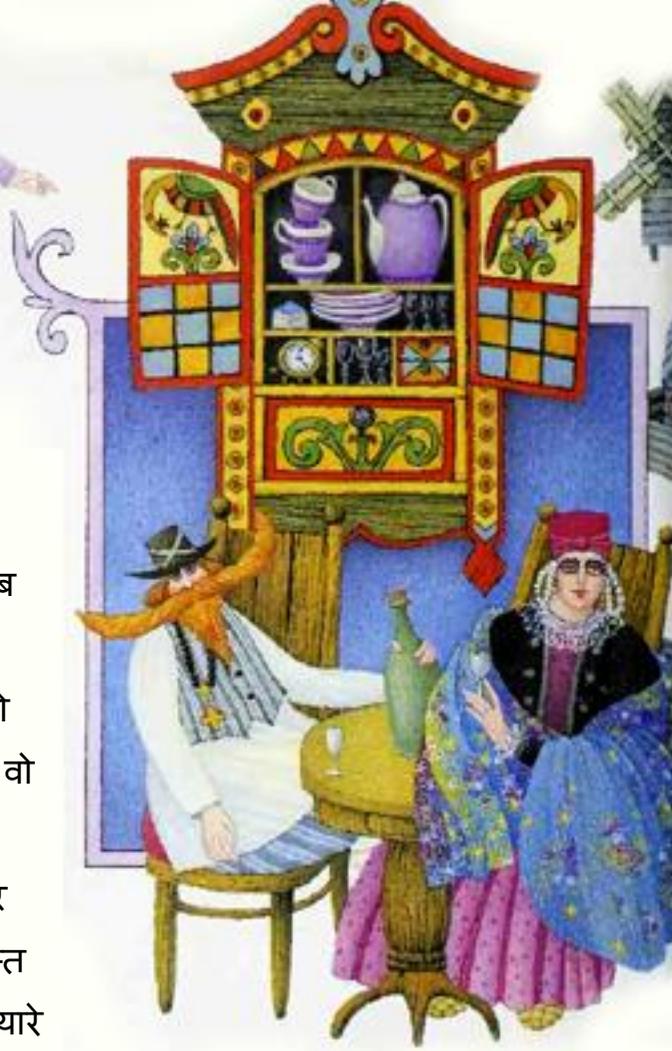
उसे अपने पड़ोसी साइमन पर शक हुआ इसलिए वो साइमन को अदालत में ले गया. परन्तु पखोम के पास कोई प्रमाण नहीं था, इसलिए जजों ने साइमन को छोड़ दिया. फिर पखोम, जजों से झगड़ने लगा. जल्द ही गाँव के सभी लोग उस पर गुस्सा हुए. पखोम के लिए गाँव में रहना बहुत अप्रिय और दूभर हो गया.
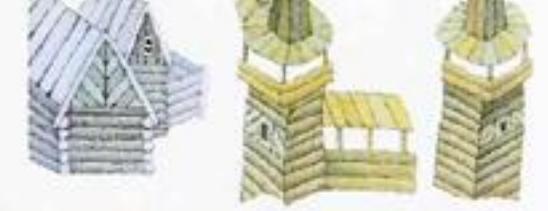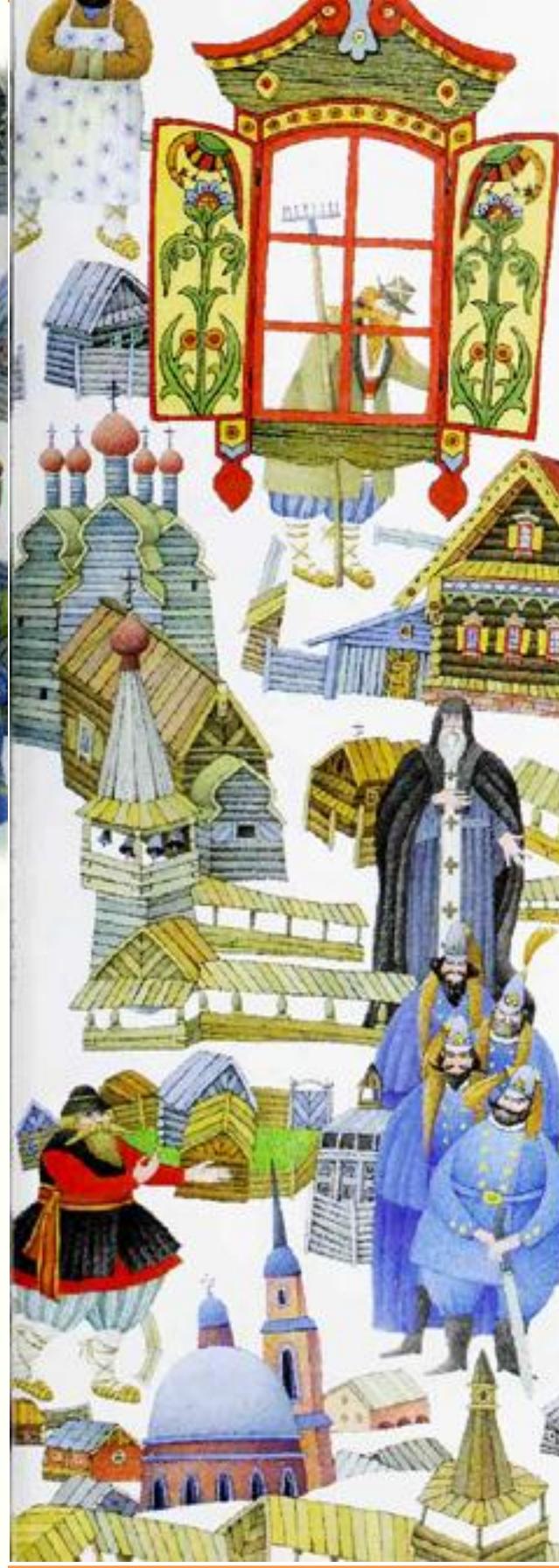
एक शाम, एक यात्री किसान ने रात में आराम करने की लिए पखोम से जगह मांगी. पखोम ने उसका स्वागत किया. रात के खाने के दौरान, किसान ने कहा, "मैं लोअर वोल्गा से आया हूं, वहां मैं काम करता रहा हूं. वहां बहुत अच्छी जमीन है. आप उसे सस्ते में खरीद सकते हैं. मेरे गांव के बहुत से लोग वहां चले गए हैं. और अब वे सब अमीर हो गए हैं." तब पखोम ने सोचा, मैं यहां क्यों गरीबी में रहूँ, जब वोल्गा में जाकर मैं अपनी स्थिति को बेहतर कर सकता हूँ?
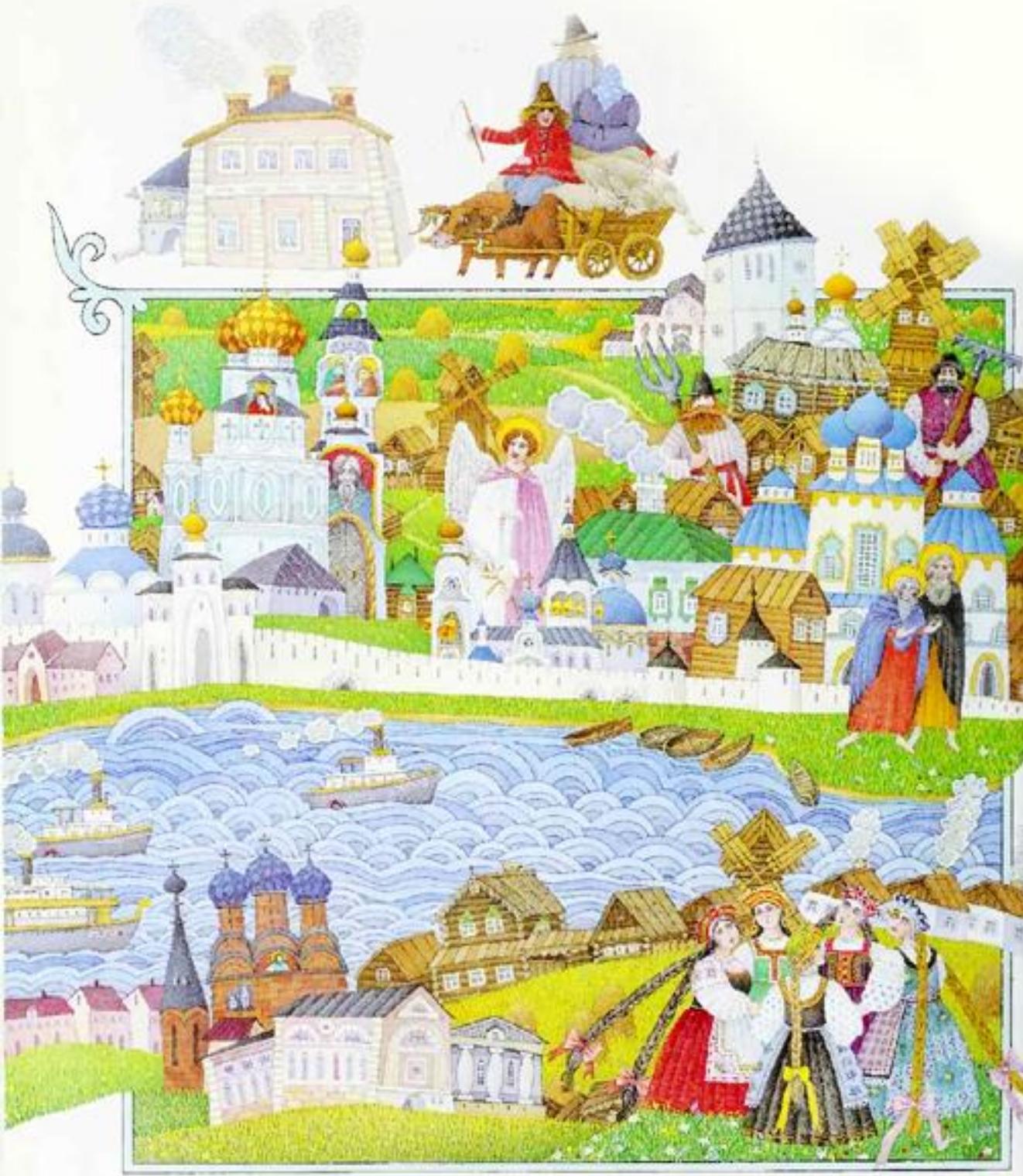
पतझड में, पखोम वहां गया. वो अजनबी द्वारा बताई बात की खुद पुष्टि करना चाहता था. और अजनबी की बात सही निकली. इसलिए पखोम घर लौट आया और अपनी सारी ज़मीन और खेत बेंच दिए, जिससे उसे अच्छा लाभ हुआ. वसंत ऋतु में, वो अपने परिवार के साथ वोल्गा चला गया.

वहां पखोम और उनके परिवार का जोरदार स्वागत हुआ. पखोम ने गांव के बुजुर्गों को खाने-पीने की चीज़ों के उदार उपहार दिए. बदले में, उन्होंने सभी आवश्यक कागजातों की जाँच-परख करने में उसकी मदद की. चूंकि पखोम का पांच लोगों का परिवार था, इसलिए उन्होंने उसे एक सौ पच्चीस एकड़ जमीन दिए जाने की पेशकश की - जो उसकी पहले की ज़मीन की पांच गुना अधिक थी. पखोम ने वहां तुरंत बसने की ठान ली. उसने मवेशी खरीदे, अपने खेतों की जुताई की, और सब कुछ ठीक रहा. लेकिन कुछ दिनों बाद पखोम एक बार फिर से खुद को असंतुष्ट महसूस करने लगा.

पखोम के खेत अलग-अलग फैले हुए थे. अच्छी फसल के लिए, उसे एक खेत से दूसरे पर जाने की ज़रूरत पड़ती थी, जो उसके लिए मुश्किल था. उसने देखा कि अमीर किसानों के घर उनके खेतों के ठीक बीच में खड़े हुए थे. और उसने सोचा: अगर मैं कुछ और ज़मीन खरीद सकूं तो मैं वहीं पर अपना घर भी बना सकता हूं.
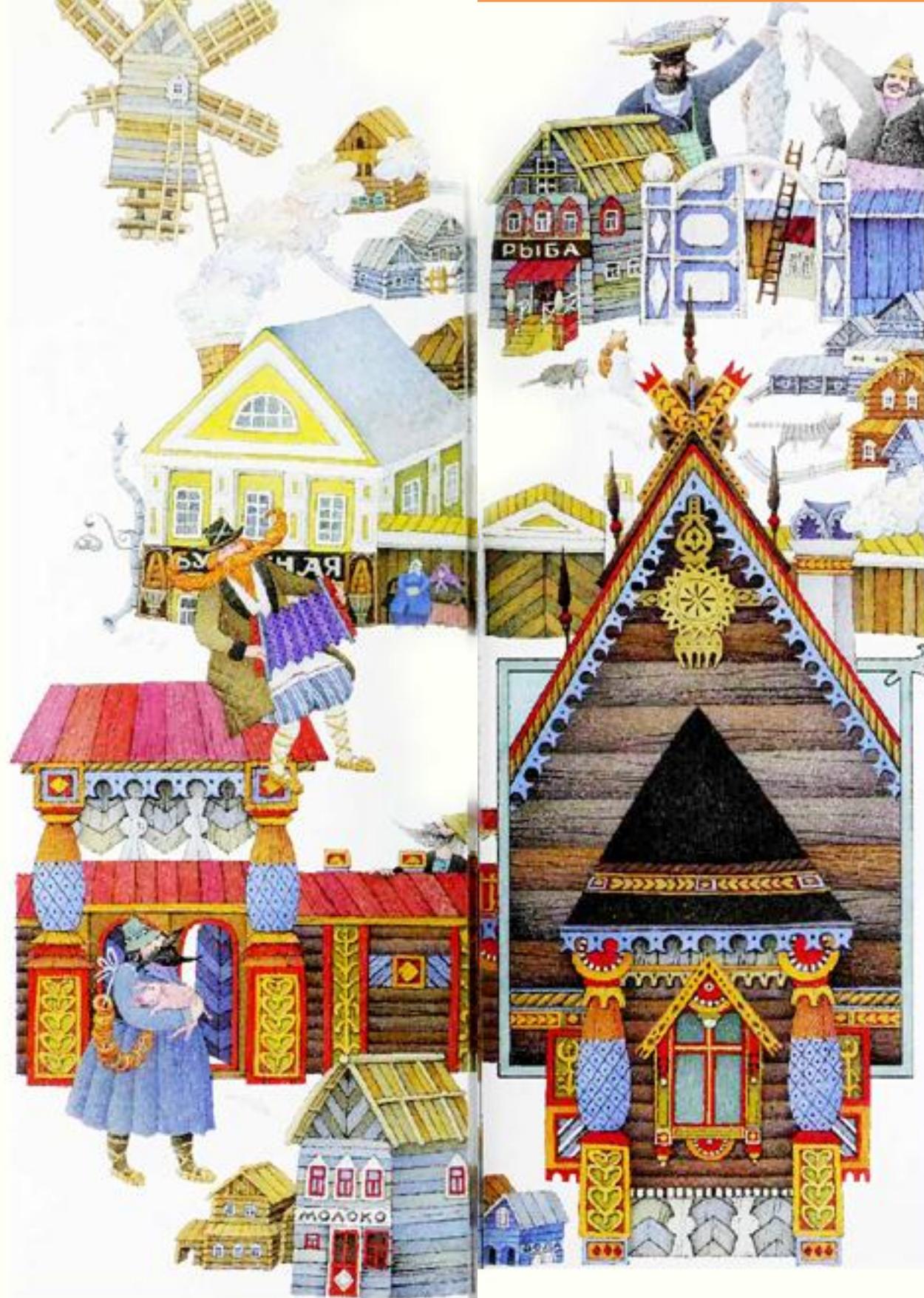
फिर उसने एक किसान के बारे में सुना जो कठिनाइयों से गुजर रहा था, पखोम ने उससे बारह सौ एकड़ जमीन एक हजार रूबल में खरीदने की व्यवस्था की. लेकिन सौदा तय होने से कुछ समय पहले, एक व्यापारी यात्री, पखोम के घर आराम करने के लिए रात को रुका.

व्यापारी ने पखोम से कहा, "मैं दूर बश्किर देश से आता हूं. वहां के लोग बहुत मिलनसार हैं. उनके पास इतनी जमीन है कि आपको उसकी परिक्रमा लगाने के लिए पूरे एक साल की जरूरत होगी. मैं उनके लिए कुछ उपहार लेकर गया और उन्होंने मुझे बारह हजार एकड़ जमीन सिर्फ हजार रूबल में बेच दी. वो बहुत अच्छी, उपजाऊ भूमि है और उसके पास में एक नदी भी है." पखोम ने मन-ही-मन सोचा : मैं यहां बारह सौ एकड़ जमीन के लिए एक हजार रूबल क्यों दूँ, अगर मुझे वहां उसी कीमत में दस गुना ज्यादा ज़मीन मिल सकती है?
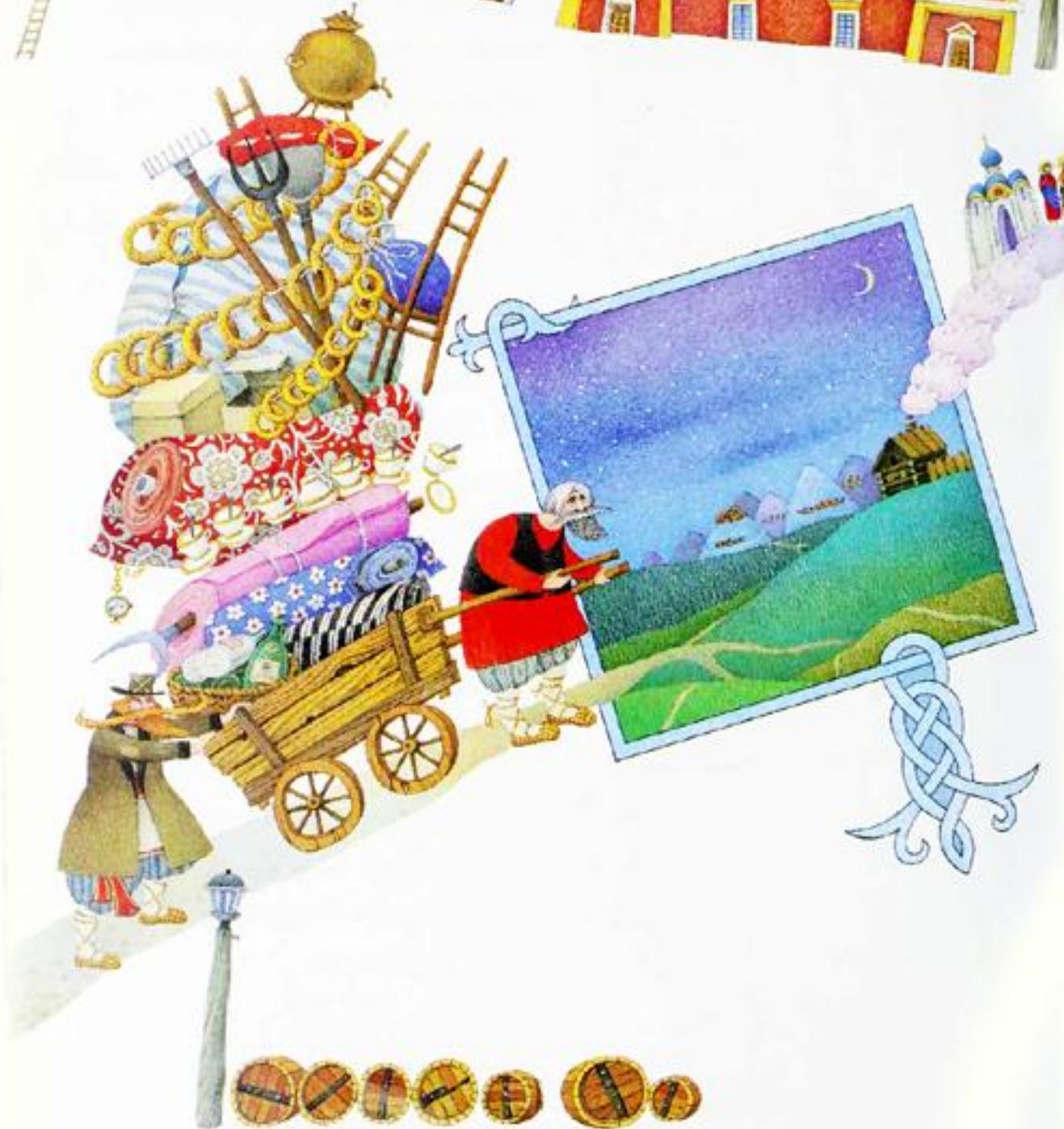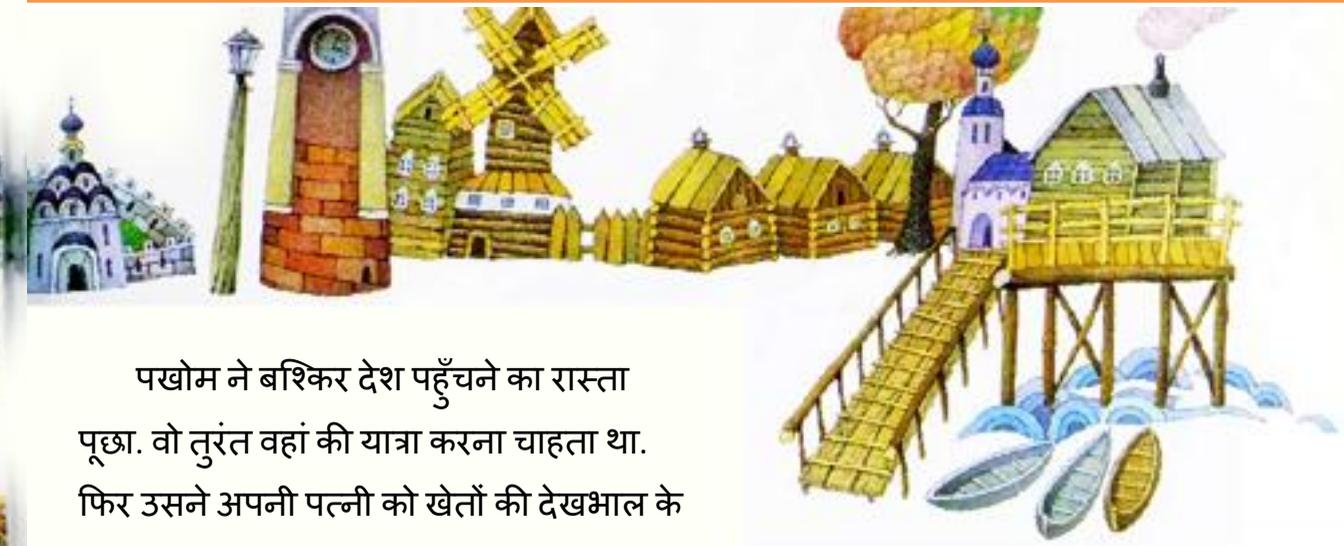
पखोम ने बश्किर देश पहुँचने का रास्ता पूछा. वो तुरंत वहां की यात्रा करना चाहता था. फिर उसने अपनी पत्नी को खेतों की देखभाल के लिए छोड़ा, और एक नौकर को अपके साथ लेकर वहां गया. वो कुछ भेंट के उपहार लेने के लिए एक शहर में ठहरा. पखोम और उसके नौकर को बश्किर तक पहुँचने में कई दिन लगे. लेकिन जब वे पहुंचे तो उनका बहुत ही दोस्ताना तरीके से स्वागत हुआ. बश्किर के लोग खुश, और लापरवाह थे. वे अपने खेतों की जुताई नहीं करते थे. उनके मवेशियों और घोड़ों के झुंडों को, स्वतंत्र रूप से घूमने की अनुमति थी: बश्किरों ने पखोम को एक तंबू में आमंत्रित किया और उसे नरम कुशन और आसन पर बिठाया.

उन्होंने उसे बढ़िया पनीर और भेड़ के बच्चे का मांस बड़ी उदारता से खिलाया और उसे पीने के लिए चाय दी. फिर पखोम ने अपने उपहार बांटे. बश्किर खुश हुए. उन्होंने कहा, “आप बहुत उदार हैं. आप बताएं कि हम आपके लिए क्या कर सकते हैं?"

पखोम ने कहा, “मैं आपसे जमीन खरीदना चाहता हूं. मेरे गांव की मिट्टी खराब हो गई है, और वो ज़मीन मेरे लिए बहुत कम है. लेकिन यहाँ भूमि अच्छी और उपजाऊ है.”

बश्किरों ने सिर हिलाया और कहा, "आपको धन्यवाद देने के लिए, हम आपको जितनी चाहिए उतनी जमीन देंगे." लेकिन फिर वे आपस में बहस करने लगे.एक समूह ने कहा, "हमें अपने बड़ों की मंजूरी के बिना कोई जमीन देने का कोई अधिकार नहीं है."

"नहीं, हम दे सकते हैं," दूसरे समूह ने कहा.

जब बश्किर आपस में बहस कर रहे थे तभी फर की टोपी पहने हुए एक व्यक्ति तम्बू में घुसा. वो बुज़ुर्ग था और विवाद का कारण जानना चाहता था. पखोम ने उसे सबसे खूबसूरत काफ्तान और पांच पाउंड चाय का उपहार दिया. बुज़ुर्ग ने पखोम से कहा, "अगर आपको जमीन चाहिए, तो जितनी चाहिए ले लें. हमारे पास काफी ज़मीन है."

पखोम ने उसे धन्यवाद दिया और कीमत के बारे में पूछा.
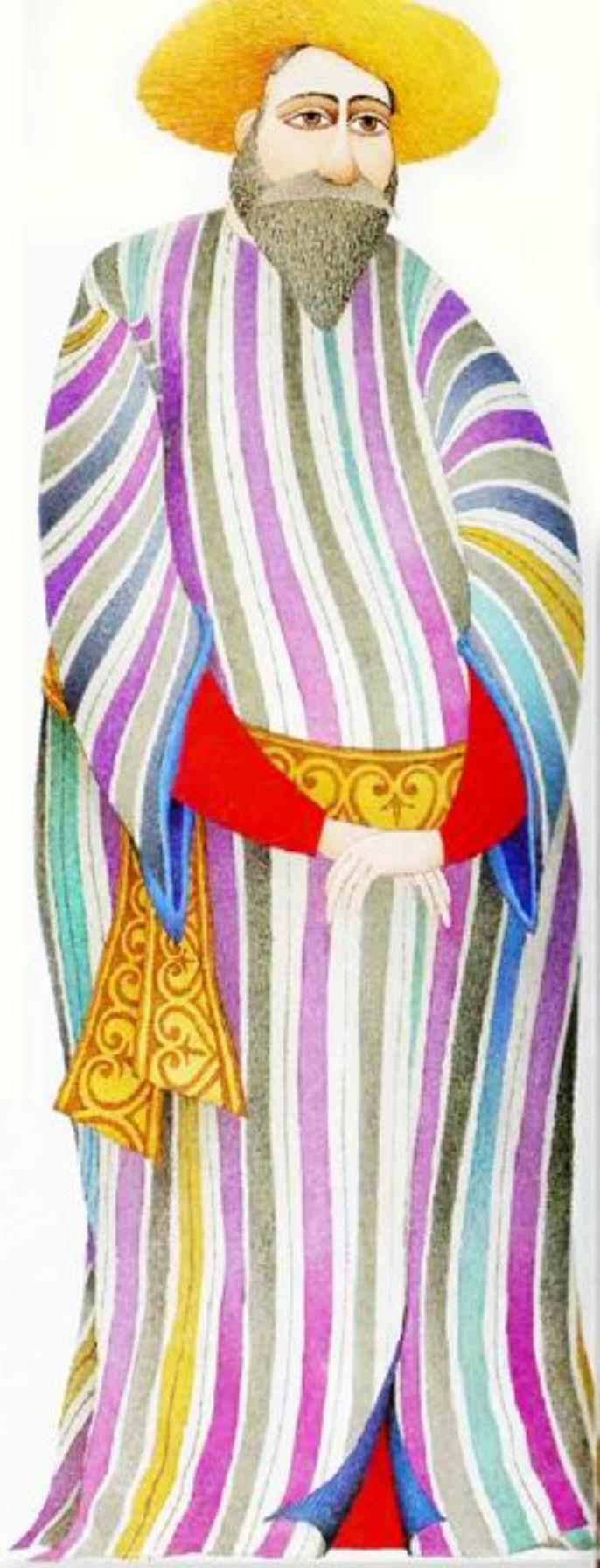
"हमारी केवल एक कीमत है," बुज़ुर्ग ने कहा. "एक दिन के लिए एक हजार रूबल." पखोम को उसका मतलब कुछ समझ में नहीं आया. तो बुज़ुर्ग ने समझाया, "तुम्हारे पास वो सारी जमीन हो सकती है, जिस पर तुम एक दिन में चल कर घूम सकते हो. और उसकी कीमत एक हजार रूबल होगी."

हैरान पखोम ने कहा, "लेकिन मैं एक दिन में एक बहुत बड़े जमीन के टुकड़े पर घूम सकता हूं."

बुज़ुर्ग ने हँसते हुए कहा, "हाँ, और फिर वो सब तुम्हारा होगा. लेकिन शाम तक तुम्हें उसी स्थान पर वापस आना पड़ेगा जहाँ से तुमने शुरुआत की थी. अन्यथा, वो जमीन तुम्हारी नहीं होगी. और तब हम तुम्हारे पैसे भी रख लेंगे और उन्हें वापिस नहीं करेंगे."

पखोम सौदे के लिए राजी हो गया. उन्होंने तय किया कि पखोम अगली सुबह जमीन पर घूमने के लिए निकलेगा.

उस रात जब पखोम लेटा, तब वो सो नहीं सका. उसने हिसाब लगाया कि एक गर्मी के लम्बे दिन में, वो अच्छी तरह से पचास मील चल सकता था. और फिर उसके दिमाग में वो सब कुछ घूमा जो वो इस सारी ज़मीन के साथ कर सकता था. "मैं खराब ज़मीन को बटाई पर दे दूंगा और बेहतर ज़मीन को अपने लिए रखूंगा. फिर मैं दो जोड़ी बैल खरीदूंगा और दो और नौकर रखूंगा."

भोर से ठीक पहले, उसे नींद आई और उसने सपना देखा. उसने देखा कि बश्किरों का बुजुर्ग तंबू के बाहर बैठा हुआ जोर-जोर से हंस रहा था.

पखोम उसके पास गया और उससे पूछा, "आप किस पर हंस रहे हैं?" तभी अचानक पखोम को वहां पर एक व्यापारी बैठा दिखाई दिया. फिर पखोम ने उससे पूछा, "क्या आप यहाँ पर लंबे समय से हैं?"

लेकिन तब वहां वोल्गा का किसान था. अचानक पखोम ने देखा कि एक लाश जमीन पर पड़ी थी और डर के मारे उसे एहसास हुआ कि वो शव उसी का था. वो तुरंत नींद से उठा और उसने दुःस्वप्न को दूर करने की कोशिश की. तब उसने अपने नौकर और बश्किरों को जगाया. "चलो, चलते हैं," पखोम ने कहा. "अब मेरे लिए ज़मीन के चारों ओर घूमने का समय है. सूरज जल्द ही उग आएगा."

बश्किर पखोम के साथ एक पहाड़ी के पास गए. ज़मीन की ओर देखते हुए, बुज़ुर्ग ने पखोम से कहा. यह सारी जमीन हमारी है. अब आप अपने लिए एक टुकड़ा चुनें. पखोम की आँखें इच्छा से जल उठीं. बुज़ुर्ग ने अपनी फर की टोपी ज़मीन पर रख दी. "यह आपका निशान है. आप यहां से शुरू करेंगे, और यही वो जगह है जहां आपको लौटना होगा, अगर आप सूर्यास्त तक वापस नहीं लौटे, तो आप सौदा खो देंगे. यदि आप वापस आते हैं, तो आप जिस जमीन पर चले हैं, वो सारी जमीन आपकी होगी."

पखोम ने अपना पैसा अपनी टोपी में रखा. फिर उसने अपना काफ्तान उतार दिया और सूरज की पहली किरण की प्रतीक्षा करने लगा.
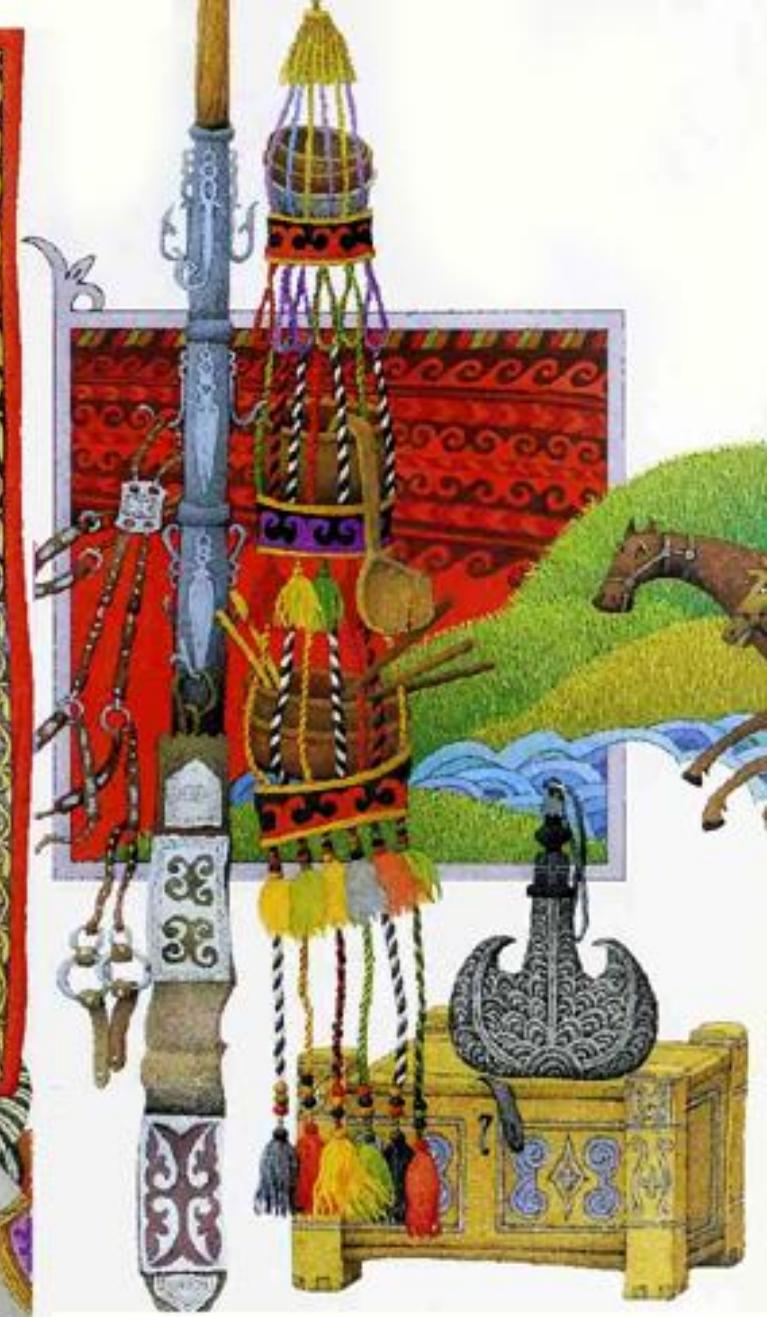
जैसे ही उसे पहली प्रकाश की किरण दिखाई दी, पखोम पूर्व की ओर चल दिया. उसके कंधे पर फावड़ा था. उसकी चाल मजबूत और निश्चित थी. वह चलता रहा और चलता रहा. बार-बार रूककर उसने अपने फावड़े से निशान बनाए.

कुछ घंटों के बाद, पखोम ने खुद से कहा: "अभी लौटने के लिए बहुत जल्दी है. यहाँ की मिट्टी बहुत अच्छी है. मैं जितना अधिक चलूँगा, मेरे पास उतनी ही अधिक अच्छी ज़मीन होगी." और फिर वो लोभ में चलता चला ही गया. वो पसीने से भीगा हुआ था. जब उसने पीछे मुड़कर उस स्थान की ओर देखा, जहां से वो निकला था, तो वो स्थान उसे चींटी के टीले के समान छोटा दिखाई दिया.
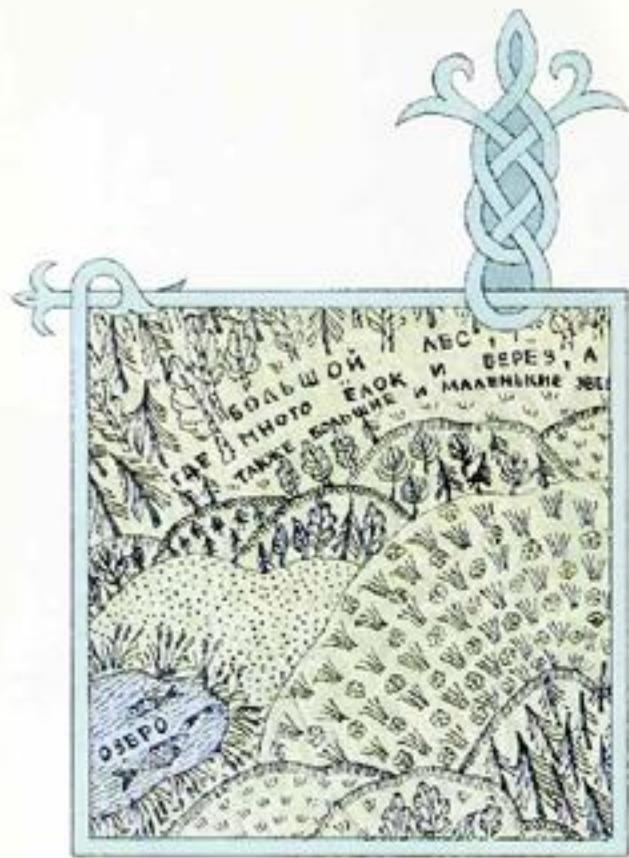
फिर वो चौकोन की दूसरी भुजा पार चलने के लिए मुड़ा. वो थक गया, और उसके सिर के ऊपर सूरज झुलस रहा था. पखोम ने केवल एक छोटा लंच ब्रेक लिया, उसने बस थोड़ा सा खाया-पिया. "मुझे आराम नहीं करना चाहिए, नहीं तो मैं सो जाऊंगा," उसने खुद से कहा. फिर वो दुबारा अपने रास्ते पर चलने लगा.
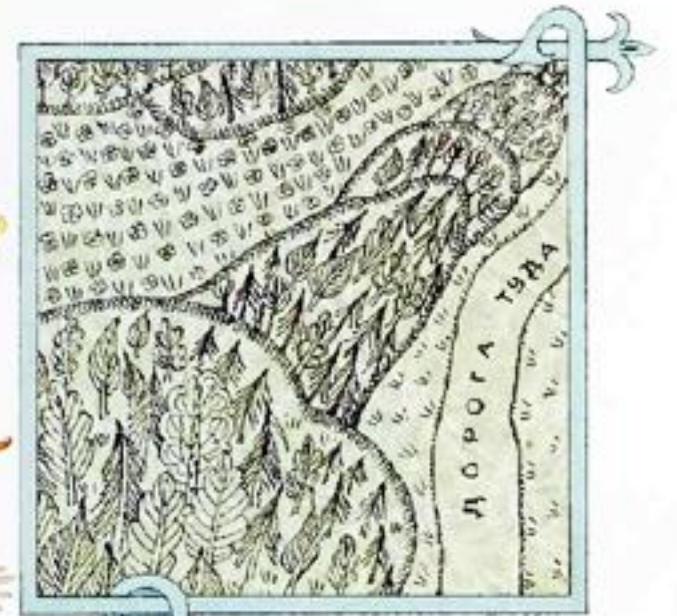
वो चौकोन की दूसरी भुजा पर भी काफी दूर तक चला. हर बार जब वो मुड़ना चाहता तो कोई खूबसूरत जगह उसे लुभाती थी, या कोई हरी घास का मैदान आ जाता था. अंत में वह चौकोन की तिसरी भुजा की ओर मुड़ा. उसने देखा कि पहली दो भुजाएं बहुत लंबी थीं. इसलिए उसने अपने कदम तेज़ कर दिए. अब उसे तीसरी भुजा को छोटा करना होगा.

अब सूर्यास्त करीब था. पखोम घबराने लगा. क्या होगा अगर वो समय पर शुरुआती बिंदु तक नहीं पहुंचा? वो जल्दी से चौथी भुजा की ओर मुड़ा. अब उसके और शुरुआत की टोपी के बीच कोई पन्द्रह मील की दूरी थी. उसने दौड़ना शुरू कर दिया, सीधे पहाड़ी की ओर.

पखोम दौड़ा और तेज़ी से दौड़ा. लेकिन टोपी अभी भी बहुत दूर थी, और वो थक गया था. उसके पैरों में दर्द था और वे छालों और खरोंचों से ढंक गए थे. "मुझे और जल्दी करनी चाहिए," उसने खुद से आग्रह किया. "मैं बहुत दूर चला गया था. अगर मुझे देरी हो गई, तो मैं जमीन और पैसे दोनों खो दूंगा." एक आखिरी प्रयास के साथ, उसने खुद को और तेजी से चलने के लिए मजबूर किया. वो हांफ रहा था, उसका दिल तेज़ी से धड़क रहा था, और उसका मुँह सूख गया था. सूरज क्षितिज पर नीचे उतर गया था. पखोम और भी तेज दौड़ा. कुछ देर में, वो पहाड़ी की तलहटी तक पहुँच गया. सूरज डूब रहा था. "काश," उसने विलाप करते हुए कहा, "मैं अपने लक्ष्य तक नहीं पहुंच पाऊंगा. मैंने सब कुछ खो दिया है, और मैं पूरी बर्बाद हो गया हूं."

तभी उसने बश्किरों की पुकार सुनी. उन्होंने उसकी ओर हाथ लहराए और उसे तेज़ी से बढ़ने के लिए प्रेरित किया. पहाड़ी की चोटी पर, सूरज अभी भी दिखाई दे रहा था. अपनी आखिरी ताकत के साथ, पखोम पहाड़ी पर चढ़ गया. बुज़ुर्ग वहीं बैठा था, और वो सचमुच जोर से हंस रहा था. पखोम कराह उठा. उसके पैर नीचे गिर पड़े. सिर्फ उसके हाथ टोपी तक पहुंचने में कामयाब रहे.
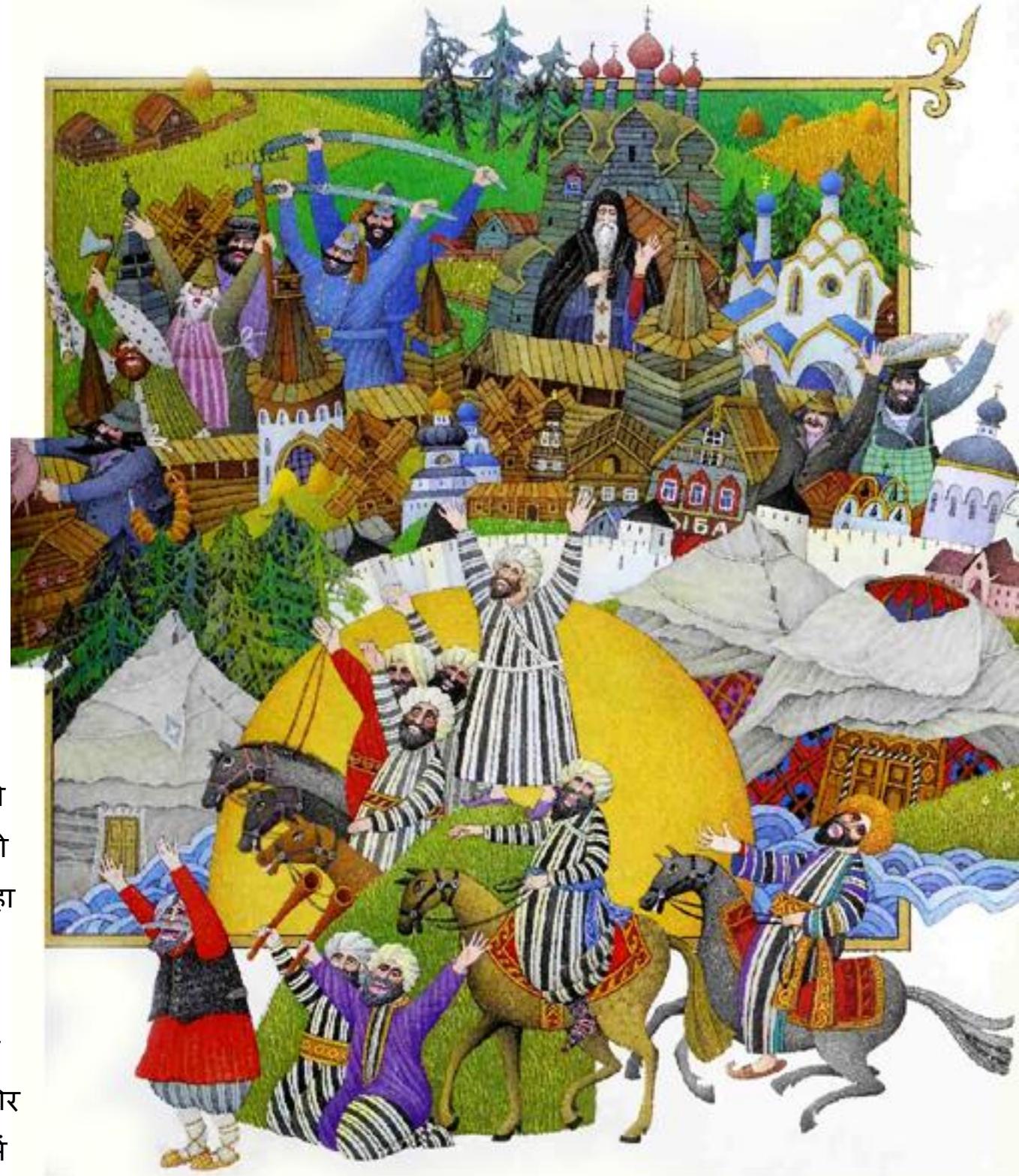
तब बुज़ुर्ग चिल्लाया, "अच्छा किया! तुमने बहुत सारी जमीन जीत ली है." लेकिन पखोम उसे सुन नहीं सका, क्योंकि वो मरकर वहीं गिर गया था. बश्किरों को गहरा दुख हुआ. पखोम के नौकर ने फावड़ा लिया और अपने मालिक के लिए एक कब्र खोदी - पखोम के शरीर जितनी लंबी और चौड़ी बिलकुल वहीं, जहां वो जमीन पर पड़ा था.

लियो टॉल्स्टॉय (1828-1910)

लियो टॉल्स्टॉय दुनिया के सबसे प्रसिद्ध लेखकों में से एक हैं. उनकी सबसे प्रसिद्ध रचनाएँ "युद्ध और शांति," "अन्ना कारेनीना", और "पुनरुत्थान" हैं. उन्होंने अनगिनत कहानियाँ और उपन्यास लिखे हैं. उनके बाद के वर्ष धार्मिक और राजनीतिक लेखन को समर्पित थे.

लेव (लियो) निकोलायेविच टॉल्स्टॉय निकोले इलिच टॉल्स्टॉय के पांच बच्चों और एक अमीर राजकुमार की बेटी, मारिया वोल्कोन्सकाया के पांच बच्चों में से दूसरे सबसे छोटे बच्चे थे. उनका जन्म 28 अगस्त, 1828, को उनके फैमिली एस्टेट, यास्नाया पोलीना (गवर्नमेंट तुला, मध्य रूस) में हुआ था. उनके माता-पिता की मृत्यु जल्दी हो गई. फिर उनकी एक चाची लियो और उसके भाइयों और बहनों की देखभाल के लिए यास्नाया आई. रूसी जमींदार अभिजात वर्ग में पैदा हुए सभी बच्चों की तरह, उन्हें घर पर ही शिक्षित किया गया, और उन्होंने एक लापरवाह बचपन के जीवन का आनंद लिया.

बाद में, टॉल्स्टॉय ने कज़ान विश्वविद्यालय में कानून का अध्ययन किया. उन्होंने तीन साल बाद अपनी पढ़ाई छोड़ दी और यास्नाया एस्टेट में आकर रिटायर हो गए, जो उन्हें विरासत में मिली थी. वो एक प्रगतिशील जमींदार बनना चाहते थे, और उनके पास अपने गुलामों के जीवन को बेहतर बनाने के लिए कई नए विचार थे. लेकिन इन परिवर्तनों के बारे में गुलामों को कुछ समझ में नहीं आया, और फिर निराश होकर टॉल्स्टॉय मास्को चले गए.

1851 में, टॉल्स्टॉय और उनका भाई रूसी सेना में शामिल हो गए और काकेशस चले गए. वहाँ टॉल्स्टॉय ने कोसैक्स के सरल जीवन की खोज की, जिसे उन्होंने बाद में अपनी कहानियों में चित्रित किया. 1854 के अंत में, उन्होंने प्रसिद्ध चौथे क्रीमियन गढ़ में सेबस्तोपोल की रक्षा में भाग लिया. सेबस्तोपोल के बारे में उनकी तीन युद्ध कथाओं ने उन्हें पूरे देश में प्रसिद्ध कर दिया. 1856 में सेना छोड़ने के बाद, टॉल्स्टॉय अपनी पुश्तैनी एस्टेट में वापस लौटे. वो अपने दासों को स्वतंत्रता देने के लिए तैयार थे, लेकिन गुलामों के अविश्वास से वो फिर से हार गए. एक विस्तारित यूरोपीय यात्रा के बाद, उन्होंने अपनी एस्टेट पर किसानों के बच्चों के लिए एक स्कूल खोला, जहाँ उन्होंने आधुनिक, सत्ता-विरोधी तरीकों के अनुसार पढ़ाया.

1862 में, उन्होंने सोफिया आंद्रेयेवना बेर्स से शादी की, जो एक डॉक्टर की बेटी थी. उनके तेरह बच्चे हुए फिर भी उनकी शादी हमेशा खुश नहीं रही. अपने जीवन के उत्तरार्ध में, टॉल्स्टॉय ने साहित्य की उपेक्षा की और खुद को धर्म के लिए समर्पित कर दिया. वो चर्च से दूर हो गए और उन्होंने अपने विचार और विश्वास विकसित किए. उन्होंने सारी सांसारिक संपत्ति को ठुकराकर उसे अपनी पत्नी के नाम कर दी और 1901 में उन्होंने नोबेल पुरस्कार से भी इनकार कर दिया.

1878 में, लेखक इवान तुर्गनेव ने टॉल्स्टॉय का दौरा किया और उनसे अपने लेखन पर वापस जाने का आग्रह किया. 1883 में अपनी मृत्युशय्या से, तुर्गनेव ने टॉल्स्टॉय को एक पत्र लिखा, जिसमें उन्होंने "रूसी भूमि के महान लेखक" को साहित्य में लौटने की सलाह दी. 1884 में, टॉल्स्टॉय ने अपनी धार्मिक गतिविधियों को जारी रखते हुए अपना साहित्यिक कार्य फिर से शुरू किया. उन्होंने अच्छी, सस्ती किताबें प्रकाशित करने की योजना के साथ एक प्रकाशन गृह की स्थापना की.

1891 में, टॉल्स्टॉय ने अपने साहित्यिक कॉपीराइट को त्याग दिया. सोफिया ने अपने बच्चों के भविष्य के बारे में सोचा लेकिन वो टॉलस्टॉय को समझाने में विफल रहीं, और उन्होंने कुछ कॉपीराइट को बनाए रखने के लिए संघर्ष किया. इस प्रकार उन्होंने बच्चों की शिक्षा के लिए कुछ पैसा हासिल किया. लेकिन टॉल्स्टॉय और सोफिया के बीच मतभेद बने रहे. 28 अक्टूबर, 1910 की रात को, टॉल्स्टॉय ने यास्नाया पोलीना की संपत्ति छोड़ दी. कुछ दिनों बाद, 7 नवंबर को, अंतरराष्ट्रीय स्तर पर प्रसिद्ध लेखक की फेफड़ों के संक्रमण से मृत्यु हो गई.

1886 में लियो टॉल्स्टॉय द्वारा लिखित कथा को बच्चों के लिए संक्षिप्त किया गया है. पखोम नामक एक लालची किसान की करामाती कहानी है. हालाँकि पखोम को स्वास्थ्य और पारिवारिक सुख प्राप्त है, वो अपने ससुराल वालों की भव्यता से ईर्ष्या करता है, वो अधिक भूमि की तलाश में जाने का फैसला करता है, केवल यह पता लगाने के लिए कि प्रत्येक अधिग्रहण के साथ नई समस्याएं विकसित होती हैं. अंततः पखोम को एक ऐसे अवसर के बारे में पता चलता है जिसे अनदेखा करना बहुत ही मुश्किल है, और वो बश्किरों की भूमि की यात्रा करता है, जहाँ वो एक दिन में उतनी ही भूमि का अधिग्रहण कर सकता है, जितना वह एक दिन में वो चल सकता है.